Introduction to Education

K.K. Chauhan

(Assistant Professor)

Department of Education,

C.S.J.M. University, Kanpur

Email: aprof.kkc@gmail.com

प्रस्तावना (Introduction)

- शिक्षा और जीवन अन्योन्याश्रित है। शिक्षा जीवन है और जीवन शिक्षा है। शिक्षा को जीवन से अलग नहीं किया जा सकता।
- जीवन की आवश्यकताओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है,

    1. एक व्यक्तिगत और
    2. दूसरी सामाजिक

1 . व्यक्तिगत आवश्यकताओं में शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, चारित्रिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक

2. सामाजिक आवश्यकताओं में पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं।

शिक्षा व्यक्ति की इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इस प्रकार व्यक्ति और समाज दोनों की दृष्टि से शिक्षा महत्त्वपूर्ण है।

- शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष धातु में अ प्रत्यय लगने से बना है। शिक्ष का अर्थ- सीखना और सिखाना, इसलिए शिक्षा का अर्थ हुआ- सीखने-सिखाने की क्रिया।

- शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में **EDUCATION** कहा जाता हैं।
- Education शब्द लैटिन भाषा के Educatum शब्द से बना हैं।
- और Educatum शब्द भी लैटिन भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना हैं –E और Duco.

  I. यहाँ **E** का अर्थ हैं – अंदर से

  II. और Duco का अर्थ हैं – बाहर निकालना।

शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा

- शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए। (सः विद्या या विमुक्तये) **(जगतगुरु शंकराचार्य)**
- शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। (By Education I mean an all round drawing out of the best in child and man in body, mind and spirit. **-महात्मा गांधी**
- मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। (Education is manifestation of perfection already present in man. **-स्वामी विवेकानंद**

- शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है। "(Education means establishment of co-ordination between the inherent powers and the outer life.) **-हर्बट स्पैन्सर**

- शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।" (Education is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfil his possibilities. -John Dewey) **-जॉन डीवी**

- शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य हैं। (Education consists in giving to the body and soul all the perfection to which they are susceptible.) -**प्लेटो**

- "सर्वोच्च शिक्षा हुआ है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती अपितु हमारे जीवन और संपूर्ण सृष्टि में तारतम्य स्थापित करती है। **टैगोर**

- शिक्षा मानव की सम्पूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास है। **(पेस्तालॉजी)**

- "असल शिक्षा वह है जो मनुष्य के अंदर से उत्पन्न होती हैं। यह व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति हैं।" **रूसो**

शिक्षा का प्रत्यय

- शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं।
- बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है।
- शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है।

- शिक्षा समाज की सामाजिक विरासत, सभ्यता और संस्कृति को पीढी दर पीढी सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण साधन है।
- शिक्षा के द्वारा ही नयी पीढ़ी को समाज की संस्कृति और सभ्यता से परिचित कराया जाता है। नयी पीढी इस विरासत में अपना योगदान करती है।
- शिक्षा का उददेश्य बालक मे ऐसी सामाजिक भावना और सामाजिक गुणों का विकास करना है। जिससे वे समाज और राष्ट्र के सदस्य के रूप में अपना उत्तरदायित्व समझ सके।
- विद्यालय स्वयं समाज का एक छोटा रूप है। अध्यापक विद्यालय में सब प्रकार के आदर्श सामाजिक वातावरण निर्माण करके शिक्षार्थियों को समाज का सही चित्र देते है।

- शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया कहा गया है, जिसका अर्थ है कि शिक्षा समाज में, समाज के लिए तथा समाज द्वारा संचालित एक प्रक्रिया है।
- शिक्षा का स्वरूप शिक्षा की प्रकृति, शिक्षा के उद्देश्य - समाज के स्वरूप, समाज की प्रकृति और समाज के उद्देश्यों पर निर्भर करते हैं।
- समाज के अस्तित्व पर ही शिक्षा का अस्तित्व निर्भर करता है।

मार्केट मीड ने कहा है कि शिक्षा वह सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रत्येक नवशिशु मानव समाज का पूर्ण सदस्य बनता है।

प्लेटो ने कहा है कि व्यक्ति ठीक उसी प्रकार से व्यवहार करता है जिस प्रकार से समाज उसे व्यवहार करना सिखाता हैं।

गिसबर्ट(Gisbert) का यह कथन भी यथार्थ है कि "यदि व्यक्ति स्वभाव से एक दार्शनिक है तो वह स्वभावतः ही एक समाजशास्त्री भी है।"

शिक्षा की प्रकृति NATURE OF EDUCATION

- शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। Education is a social process.
- शिक्षा अविरत प्रक्रिया है। Education is a continuous process.
- शिक्षा द्विध्रुवीए प्रक्रिया है। Education is a bipolar process.
- शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। Education is a process of development.
- शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है। Education is a dynamic process.

शिक्षा के प्रकार या शिक्षा की संस्थाएं

नियमित या औपचारिक शिक्षा (Formal Education)

Formal education refers to the systematic and sequential acquiring of knowledge and skills – usually at a school, university, or college.

औपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ-

1. औपचारिक शिक्षा नियमित होती है।
2. औपचारिक शिक्षा में पहले योजना बना ली जाती है।
3. इसमें शिक्षा के उद्देश्य पहले से ही निर्धारित होते हैं।
4. औपचारिक शिक्षा में उद्देश्यों की प्राप्ति के अनुसार ही पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।
5. औपचारिक शिक्षा शिक्षण संस्थाओं की सीमा में दी जाती है।
6. इस शिक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम के शिक्षण हेतु शिक्षण विधियाँ निर्धारित होती हैं।
7. वे संस्थाएँ जिनका निर्माण समाज (स्कूल, चर्च तथा मदरसा) करता है। औपचारिक शिक्षा प्रदान करती हैं
8. यह शिक्षा सामाजिक जीवन की आकांक्षाओं, मान्यताओं, आदर्शों तथा आवश्यकताओं की प्रतीक है
9. यह शिक्षा वर्तमान एवं भावी जीवन की तैयारी है।

अनियमित या अनौपचारिक या सहज शिक्षा (Informal Education)

- Informal education refers to a lifelong learning process, whereby each individual acquires attitudes, values, skills and knowledge from the educational influences and resources in his or her own environment and from daily experience.

अनौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ-

1. अनौपचारिक शिक्षा का उद्देश्य समयानुसार होता है।
2. यह शिक्षा व्यावहारिक होती है। इसका सम्बन्ध मनुष्य की प्रत्यक्ष आवश्यकताओं से होता है।
3. इस शिक्षा का क्षेत्र सीमित होता है। अनौपचारिक शिक्षा के नियमों तथा क्रमों में लचीलापन होता है
4. यह शिक्षा वर्तमान पर अधिक बल देती है।
5. इस शिक्षा का संगठन एवं प्रशासन व्यक्ति की मूल आवश्यकताओं, समस्याओं, भौतिक साधनों की उपलब्धि एवं मानवीय साधनों की प्राप्ति हेतु होता है।
6. इसका लक्ष्य भी विशिष्ट होता है।

- **निरोपचारिक शिक्षा Non-Formal Education –**
- Non-formal education is a mixed form of both types of teachings.
- Non-formal education is that it is an addition, alternative and/or a complement to formal education within the process of the lifelong learning of individuals.

उद्देश्य

1. भावी जीवन की उन्नति तथा समृद्धि हेतु।
2. संवैधानिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु।
3. औपचारिक शिक्षा की कमियों तथा उनकी पूर्ति हेतु।
4. शैक्षिक स्तर के उन्नयन हेतु।
5. शिक्षा स्तर में गिरावट तथा छात्रों में उसके प्रति उदासीनता के समाधान हेतु।
6. जनसंख्या वृद्धि से उत्पत्र कठिनाइयों के निवारण हेतु ।

1. निरक्षर छात्र, जो 6 से 14 आयु वर्ग के हैं।
2. निरक्षर प्रौढ़, जो 15 से 25 आयु वर्ग के हैं।
3. अर्द्धशिक्षित प्रौढ़ों के लिये।
4. व्यवसायपरक प्रशिक्षण हेतु।
5. सभी के लिये निरन्तर प्रदान की जाने वाली शिक्षा व्यवस्था।
6. कृषकों तथा मजदूरों के लिये अनौपचारिक शिक्षा।
7. विश्वविद्यालयी अनौपचारिक शिक्षा।

शिक्षा का व्यापक एवं संकुचित अर्थ
(Wider and Narrower Meaning of Education)

- **व्यापक अर्थ में** शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।
- **संकुचित अर्थ में** शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालयों) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

व्यापक शिक्षा

1. व्यापक अर्थ में शिक्षा मनुष्य के जीवन भर चलती है। इसमें वह शिक्षा भी सम्मिलित होती है जिसे संकुचित शिक्षा अथवा विद्यालयी शिक्षा कहते है।
2. इसमें अनियोजित एवं नियोजित, दोनों प्रकार की शिक्षा आती हैं।
3. इस शिक्षा के उद्देश्य अति व्यापक होते हैं, उन्हें सीमा में नहीं बांधा जा सकता है।
4. इस शिक्षा की पाठ्यचर्या अति व्यापक होती है, उसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता।
5. इस शिक्षा की शिक्षण विधियों विविध होती है; उन सबका वर्णन नहीं किया जा सकता।
6. यह शिक्षा किसी भी स्थान पर और किसी भी समय चलती रहती है।
7. यह शिक्षा किन्ही भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच चलती है।

संकुचित शिक्षा

1. संकुचित अर्थ में शिक्षा मनुष्य के जीवन में एक निश्चित काल में ही चलती है। इसके क्षेत्र में केवल विद्यालयी शिक्षा ही आती है।
2. इसमें केवल नियोजित शिक्षा आती है।।
3. इस शिक्षा के उद्देश्य सुनिश्चित होते हैं, उनकी अपनी सीमा भी निश्चित होती है।
4. इस शिक्षा की पाठ्यचर्या सुनिश्चित होती है. उसकी अपनी सीमा होती है।
5. इस शिक्षा हेतु कुछ शिक्षण विधियों का विधान किया जाता है।
6. यह शिक्षा केवल विद्यालयों में ही चलती है और इस शिक्षा के लिए समय भी पूर्व निश्चित होता है।
7. यह शिक्षा निश्चित शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच चलती है।

References

- Aggarwal, J. C. (2014). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Delhi: Shipra publication.
- Arulsamy, S. (2011). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Hyderabad: Neelkamal Publication Pvt. Ltd.
- Dewey, J. (1956). The school and Society. Chicago: University of Chicago Press.
- Dewey, J. (1963). Democracy and education. New York: Macmillan.
- Freire, P (1970). Cultural action for freedom. Penguin education Special, Ringwood, Victoria, Australia
- Ballantine, J. H., & Hammack, F. M. (2009). *The sociology of education: A systematic analysis* (6th ed.). Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall.
- Freire, Paulo (1993). Pedagogy of the oppressed (revised ed.). London, UK: Penguin books.
- Ghosh, S.C. (2007) History of education in India , Rawat publications .
- Govt. of India (2009) The right of Children to free and compulsory education act 2009
- Nambisan, G.B.(2009) Exclusion and discrimination in school experiences of Dalit children , Indian institute of Dalit Studies and UNICEF.
- Pathak A. (2013) social implication of schooling; knowledge, Pedagogy and consciousness. Aakar books

- ✓ • अग्रवाल एस० के०, शिक्षा के दार्शनिक एवम समाजशात्रीय आधार आगरा भार्गव बुक हाउस ।
- ✓ • पाण्डेय, रामशकल शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि: आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • पाल, एस० के० गुप्त, लक्ष्मी नारायण, मदन मोहन, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद, कैलाश प्रकाशन
- ✓ • माथुर, एस० एस० शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • लाल, रमन बिहारी: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- ✓ • सक्सेना एन० आर० एस० शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार आगरा भार्गव बुकहाउस ।

Thank you…